शोध मंथन Vol. XII No.III July-Sep. 2021 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X
Available at: *http:/shodhmanthan.anubooks.com*

महिला आंदोलन एक सतत संघर्ष

मेघा अग्रवाल
एम० ए०, एम०फिल (इतिहास)
ईमेलः *meghaagarwal816@gmail.com*

प्राप्तिः 17.08.2021
स्वीकृतः 10.09.2021

सारांश

आंदोलन एक सामूहिक संघर्ष है। किंतु ''संघर्ष और आंदोलन'' एक ही चीज नहीं है। संघर्ष रोजमर्रा की जिंदगी का अभिन्न हिस्सा है। वर्गों में बँटे और शोषण पर टिके समाज में व्यक्ति हर रोज अनगिनत रूपों में संघर्ष करता हैं। यह संघर्ष व्यक्ति के समूह या वर्ग संघर्षो का हिस्सा भी होता है। लेकिन, इन सबको आदोलन नहीं कहा जा सकता। आंदोलन, चाहे वह संगठित हो या स्वतःस्फूर्त, संघर्ष के विकास की एक अवस्था है जहाँ संघर्ष का स्वरूप आम हो जाता है जिससे संघर्ष व्यक्तिगत न रहकर, सामूहिक हो जाता है।

19वीं शताब्दी में पुनर्जागरण के फलस्वरूप जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में महिला आंदोलन के उदय का मार्ग प्रशस्त हुआ। इस आंदोलन के कुछ अपने तरीके व पद्धतियाँ थीं। इसका स्वरुप पूर्णरूपेण अहिंसावादी और शान्तिमय था। इस आंदोलन में पढ़ी–लिखी और अनपढ़ सभी वर्ग की महिलाएँ सम्मिलित थीं जिन्हें यह विश्वास था कि महिला स्वयं सर्वशक्तिमान है और उसमें भी वह सब शक्तियाँ विद्यमान है जो ईश्वर ने इन्सान को प्रदान की है।

धीरे–धीरे भारतीय महिला आंदोलन ने अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अपना स्थान बनाया। महिला आंदोलन से सम्बंधित कुछ अलग–अलग संगठन व संस्थाएँ हैं जिसमें स्वायत्तता, नारीवाद संगठन, वामपंथी महिला समूह, गांधीवादी महिला समूह, धर्म अथवा समुदाय तथा भिन्न–भिन्न व्यवसाय पर आधारित समूह हैं।

महिला आंदोलन की सबसे सुदृढ़ कड़ी आम महिला से जुड़ाव है। समाज के अंदर, कार्य स्थलों पर, घर–परिवार में तथा पास–पड़ौस में ऐसे अनेक अनौपचारिक समूह हैं जिनसे महिलाओं को विपरीत परिस्थितियों में सहारा प्राप्त होता है।

मूल बिन्दु

महिला, आंदोलन, संगठन, संस्थाएँ

आंदोलन एक सामूहिक संघर्ष है। किंतु ''संघर्ष और आंदोलन'' एक ही चीज नहीं है। संघर्ष रोजमर्रा की जिंदगी का अभिन्न हिस्सा है। वर्गों में बँटे और शोषण पर टिके समाज में व्यक्ति हर रोज अनगिनत रूपों में संघर्ष करता हैं। यह संघर्ष व्यक्ति के समूह या वर्ग संघर्षो का हिस्सा भी होता है। लेकिन, इन सबको आंदोलन नहीं कहा जा सकता। आंदोलन, चाहे वह संगठित हो या स्वतःस्फूर्त,

संघर्ष के विकास की एक अवस्था है जहाँ संघर्ष का स्वरूप आम हो जाता है जिससे संघर्ष व्यक्तिगत न रहकर, सामूहिक हो जाता है।

19वीं शताब्दी में पुनर्जागरण के फलस्वरूप जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में रूढ़िवादी परम्पराओं का खण्डन किया गया और लोग नवीन प्रगतिशील मार्ग की ओर उन्मुख हुए। महिलाएँ भी इस प्रभाव से अछूती नहीं रही और महिला आंदोलन के उदय का मार्ग प्रशस्त हुआ। पाश्चात्य शिक्षा पद्धति से महिलाएँ भी प्रभावित हुई और वे उत्पीड़न व शोषण के विरुद्ध बचाव हेतु नारी आंदोलन की ओर प्रशस्त हुई। धीरे–धीरे सम्पूर्ण देश की शिक्षित महिलाओं ने नारी आंदोलन के द्वारा अपनी स्थिति सुधारने के लिए साधारण महिलाओं को भी इसमें सम्मिलित कर लिया।

महिला आंदोलन को गति देने वाले विभिन्न पहलुओं में एक प्रमुख कारण उनकी दयनीय व शोचनीय स्थिति व उपेक्षा का भी था। देष में व्याप्त अन्धकारपूर्ण और अराजगतामय वातावरण में महिलाओं की स्थिति उत्तरोत्तर गिरती जा रही थी। अशिक्षा और अज्ञान के कारण महिलाएँ पुरुष की दासी बनने के लिए बाध्य हो गई थीं। स्वयं को इस दयनीय स्थिति से मुक्त करने का उनके पास एक मात्र विकल्प महिला आंदोलन था। अतः उन्होंने उसी का अवलम्बन करते हुए अपने दुर्भाग्य को सौभाग्य में बदलने का प्रयास किया। राजकुमारी अमृत कौर ने इस आंदोलन के सन्दर्भ में उल्लेख किया है कि, ''इस आंदोलन के माध्यम से भारत की महिलाओं को अपनी भावनाओं को सहज रूप में व्यक्त करने के लिए एक सार्वजनिक मंच प्राप्त हुआ था जिसके फलस्वरूप भारत का महिला आन्दोलन आत्मचेतना के चरम बिन्दु पर पहुँच गया है।''

इस आंदोलन के कुछ अपने तरीके व पद्धतियाँ थीं। इसका स्वरुप पूर्णरूपेण अहिंसावादी और शान्तिमय था। इस आंदोलन में पढ़ी–लिखी और अनपढ़ सभी वर्ग की महिलाएँ सम्मिलित थीं जिन्हें यह विश्वास था कि महिला स्वयं सर्वशक्तिमान है और उसमें भी वह सब शक्तियाँ विद्यमान हैं जो ईश्वर ने इन्सान को प्रदान की है। अनेक महिलाओं के खून–पसीने, आँसुओं को सहने, विचारों और शक्तियों से इस आंदोलन को सींचा गया और अन्ततः उन्होनें अपने प्रति किए गए अन्याय, हिंसा और शोषण को भट्टी में भस्मीभूत करने का निश्चय किया ताकि वे सुखमय जीवन की ओर अग्रसरित हो सकें। वर्तमान में जब सम्पूर्ण विश्व में छोटे–बड़े भेदभाव, दरिद्रता और हिंसात्मक टकरावों का संकट छाया हुआ है, महिलाओं की सामूहिक शक्ति का अपना अलग ही महत्व है जिसे महिलाओं ने अपने प्रयास और क्षमता से विस्तृत और बहुआयामी बनाया है। महिलाओं ने अपने सामूहिक प्रयासों से अपनी स्थिति में सुधार करने का निश्चय किया है। उनका प्रयास है कि वे बाल विवाह, पर्दा और बहु–विवाह जैसी कुरीतियों से छुटकारा प्राप्त करके समाज, राष्ट्र और विश्व के सम्पूर्ण ढाँचे में परिवर्तन ला सकें।

निःसंदेह सुधार आंदोलन के प्रवर्तकों राजा राममोहन राय, स्वामी दयानन्द सरस्वती, स्वामी विवेकानन्द, ऐनीबेसेण्ट आदि ने अपनी संस्थाओं के माध्यम से तथा दक्षिण सुधार आंदोलन के प्रबुद्ध नेताओं ने महिलाओं को जो अंधविश्वासों और रूढ़ियों में जकड़ी हुई थीं, मुक्ति दिलाने का प्रत्येक सम्भव प्रयास किया था। परन्तु फिर भी उनकी दृष्टि में कोई विशेष परिवर्तन दिखाई नहीं दिया। अतः महिलाओं ने स्वयं अपने लिए महिला आंदोलन का सूत्रपात किया ताकि अपनी क्षमता और प्रयासों से वह स्वयं के लिए कुछ कर सकें। अतः उन्होंने शान्तिपूर्ण महिला आंदोलन का देश में सूत्रपात किया।

धीरे–धीरे भारतीय महिला आंदोलन ने अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अपना स्थान बनाया। इस

आंदोलन के मूल में दलित, कार्यकारी, श्रमिक, निम्न, मध्यम और उच्च सभी वर्ग के महिलाओं का सहयोग व समर्थन विद्यमान है। महिला आंदोलन की सफलता के लिए यह आवश्यक है कि उसके दूसरे आन्दोलनों से जुड़ाव को भली प्रकार समझा जाये और उसमें किसी प्रकार का कोई व्यवधान उत्पन्न न किया जाये अपितु उसे बनाये रखा जाये। भारतीय महिला आंदोलन के इतिहास में हमें ऐसे कई उदाहरण प्राप्त हैं जहाँ भारत में निवास करने वाली भिन्न–भिन्न जातियों और वर्गों के लोगों ने संयुक्त होकर संघर्ष किया है। महिला आंदोलन भारत के स्वाधीनता संग्राम से भी अत्यन्त समीपता से सम्बद्ध है जब वर्ग, जाति और लिंग भेद के शोषण से दबी हुई महिलाएँ अपने मौन को भंग करती है तब समाज और देश का सामाजिक व आर्थिक ढाँचा चरमराने लगता है।

महिला आंदोलन से सम्बंधित कुछ अलग–अलग संगठन व संस्थाएँ हैं जिसमें स्वायत्तता, नारीवाद संगठन, वामपंथी महिला समूह, गांधीवादी महिला समूह, धर्म अथवा समुदाय तथा भिन्न–भिन्न व्यवसाय पर आधारित समूह हैं जिनमें आन्तरिक भिन्नता होते हुए भी व्यवहार में कोई अन्तर दृष्टिगोचर नहीं होता है। उदाहरणार्थ 'सेवा' (सेल्फ एम्प्लायड वुमेन्स एसोसिएशन) ने कामगार महिलाओं को ट्रेड यूनियन के आधार पर संगठित किया है किन्तु वैचारिक रूप से वह गाँधी दर्शन से प्रभावित है। इसी तरह 'प्रगतिशील महिला संगठन' एक स्वायत्त संगठन होते हुए भी वैचारिक दृष्टि से एक सीमा तक वामपन्थी है। साथ ही यद्यपि 'यंग वुमेन्स क्रिश्चियन एसोसिएशन' धर्म पर आधारित संगठन होने के बाद भी महिलाओं की समस्याओं को उठाने के लिए 'फोरम अगेंस्ट आप्रेशन ऑफ वुमेन' और 'अखिल भारतीय जनवादी महिला संगठन' जैसे वामपंथी संगठन का सहयोग प्राप्त था।

महिला आंदोलन की सबसे सुदृढ़ कड़ी आम महिला से जुड़ाव है। ऐसी महिलाएँ शताब्दियों से विरोध का स्वर उठाये हुए हैं और असहयोग के लिए प्रयासरत हैं। अतः विद्वानों द्वारा असहमत होने के बाद भी यह स्पष्ट है कि आंदोलन के मूल में छोटे–छोटे अनौपचारिक महिला समूह हैं जो एक–दूसरे को सहायता व सहारा प्रदान करते हैं। समाज के अंदर, कार्य स्थलों पर, घर–परिवार में तथा पास–पड़ौस में ऐसे अनेक अनौपचारिक समूह हैं जिनसे महिलाओं को विपरीत परिस्थितियों में सहारा प्राप्त होता है।

1970 ई० के दशक तक आते–आते महिला आंदोलन ने एक नया आकार और स्वरुप प्राप्त कर लिया जो अब तक चले आ रहे ढाँचे से बिल्कुल अलग था। इस बार महिलाओं का आंदोलन अद्वितीय था और उसने एक नवीन इतिहास की रचना की। यह आंदोलन आगामी दो दशकों तक क्रियाशील बना रहा। 1980 ई० के दशक में दहेज विरुद्ध छेड़े गये आंदोलन ने देश के विभिन्न भागों में निवास करने वाली महिलाओं को एकता के सूत्र में बाँध दिया। चूँकि दहेज प्रत्येक जाति की एक समस्या बन गयी है अतः समस्त महिला संगठनों ने दहेज की निरंतर बढ़ती हुई बुराइयों, उससे सम्बद्ध उत्पीड़न व दहेज हत्या के विरुद्ध अपनी आवाज बुलंद की। साथ ही इस अवधि में उन्होंने घरेलू हिंसा, महिलाओं के वस्तुकरण, उन्हें सम्पत्ति सम्बन्धी अधिकार न दिये जाने आदि कई महिला कल्याणकारी मुद्दों के विरुद्ध अपनी आवाज उठायी। यौनिक हिंसा के विरुद्ध भी इस अवधि में प्रदर्शन हुए और बलात्कारी के सामाजिक बहिष्कार पर बल दिया गया।

1990 ई० के अल्पवयस्क बच्चियों के यौन शोषण के अपराध का पर्दाफाश हुआ। फलतः 1990 ई० में शिक्षिकाओं और छात्राओं ने ऐसी घटनाओं का सामना करने के लिए 'स्वाभिमान' नामक एक समूह का गठन किया और महिलाओं के अनेकानेक प्रयासों के फलस्वरूप यौन उत्पीड़न को कानूनन जुर्म माना गया और इसके लिए अपराधी को सजा देने की व्यवस्था की गई।

इसी प्रकार सती प्रथा के विरुद्ध भी महिलाओं ने 1980ई० के दशक में आवाज उठाई और विभिन्न क्षेत्रों में होने वाली सती की घटनाओं पर रोष प्रकट किया तथा उसे कानून की दृष्टि में अपराध माने जाने की माँग की। इसी प्रकार बालिका भ्रूण हत्या के विरुद्ध भी महिला संगठनों ने जोरदार विरोध प्रस्तुत किया। 1995 ई० में बिहार में एक समूह 'अदिति' ने 'बालिका बचाओ अभियान' चलाया ताकि कन्या भ्रूण हत्या पर अंकुश लगाया जा सके।

1. महिलाओं के साथ–साथ पुरुषों ने भी इस आंदोलन में पूर्ण सहयोग व संरक्षण प्रदान किया। समस्त समाज सुधारकों ने भी इस आंदोलन की सफलता के लिए इसमें सहयोग प्रदान किया।

2. यह आंदोलन केवल महिलाओं के सामाजिक और आर्थिक हितों तक सीमित नहीं था अपितु इसका क्षेत्र भारत के स्वाधीनता आंदोलन और आधुनिक आंदोलन भारत के निर्माण में महिलाओं के प्रयासों तक विस्तृत था। इसी कारण महिलाओं ने गाँधीजी द्वारा संचालित विभिन्न आंदोलन में पूर्ण क्षमता और विश्वास के साथ भाग लिया।

3. महिला आंदोलन के किसी भी भाग में पुरुषों के विरोध का कोई स्थान प्राप्त नहीं था। यद्यपि पुरुष प्रधान समाज में प्रचलित अनेक नियमों व उपनियमों के कारण महिलाओं की स्थिति पर्याप्त दयनीय हो गयी थी फिर भी उन्होंने केवल अपनी दशा को सुधारने के लिए ही प्रयास किये और कहीं भी पुरुषों के प्रति विद्रोह और घृणा की भावना का प्रदर्शन नहीं किया।

4. इस आंदोलन के फलस्वरूप महिलाओं की आत्मचेतना जागृत हुई। उसने शिक्षा के समान अवसरों का पूरा–पूरा लाभ उठाया। एक ओर उन्होंने पाश्चात्यीकरण से अपनी संस्कृति का बचाव किया और दूसरी ओर राष्ट्रीय आंदोलन में भाग लेकर देश की सुरक्षा में पूर्ण सहयोग प्रदान किया।

5. औपनिवेशिक काल में कुछ भारतीय महिलाएँ शिक्षित व प्रशिक्षित हो गयी थी। वे देश की सेवा सामाजिक व आर्थिक क्षेत्र में करने की इच्छुक थी और उन्होंने शिक्षा, चिकित्सा, वकालत और व्यापार के विकास में अपना महत्वपूर्ण योगदान प्रदान किया जिसके कारण औपनिवेशिक युग में महिलाएँ सहज सम्मान अर्जित करके अपने महत्व को स्थापित करने में सफल रही।

निष्कर्ष स्वरुप हम यह कह सकते है कि महिलाओ ने अपनी आर्थिक स्थिति को सुधारने के लिए जो भी कार्य किये उसके फलस्वरूप महिलाओं को समाज में पहचान मिली जिससे उन्हें सम्मान की दृष्टि से देखा जाने लगा। उपरोक्त तथ्यों से दृष्टिगोचर होता है कि महिलाओं की आंदोलन में सतत भूमिका रही।

सन्दर्भ सूची :–

1. खुराना एवं चौहान– भारतीय इतिहास में महिलाएँ
2. दीप्ति प्रिय महरोत्रा– भारतीय महिला आंदोलन (कल आज और कल)
3. साधना सक्सेना– शिक्षा और जन आंदोलन
4. घनश्याम शाह– भारत में सामाजिक आंदोलन
5. राधा कुमार– स्त्री संघर्ष का इतिहास
6. विपिन चंद्र– आधुनिक भारत
7. एल० पी० शर्मा– भारत का इतिहास